1 John

1 We want to tell you about the Word that gives
life—the one who existed before the world
began. This is the one we have heard and have
seen with our own eyes. We saw what he did,
and our hands touched him. 2 Yes, the one who
is life was shown to us. We saw him, and so we
can tell others about him. We now tell you about
him. He is the eternal life that was with God the
Father and was shown to us. 3 We are telling you
about what we have seen and heard because we
want you to have fellowship with us. The
fellowship we share together is with God the
Father and his Son Jesus Christ. 4 We write these
things to you so that you can be full of joy with
us.

God Forgives Our Sins

5 We heard the true teaching from God. Now
we tell it to you: God is light, and in him there
is no darkness. 6 So if we say that we share in
life with God, but we continue living in
darkness, we are liars, who don't follow the
truth. 7 We should live in the light, where God
is. If we live in the light, we have fellowship
with each other, and the blood sacrifice of Jesus,
God's Son, washes away every sin and makes us
clean.

8 If we say that we have no sin, we are
fooling ourselves, and the truth is not in us.
9 But if we confess our sins, God will forgive
us. We can trust God to do this. He always
does what is right. He will make us clean
from all the wrong things we have done. 10 If
we say that we have not sinned, we are saying
that God is a liar and that we don't accept his true
teaching.

Jesus Is Our Helper

2 My dear children, I write this letter to you
so that you will not sin. But if anyone sins,

1 यूहन्ना

1 वह सृष्टि के आरम्भ से ही था: हमने इसे सुना
है, अपनी आँखों से देखा, ध्यान से निहारा, और
इसे स्वयं अपने ही हाथों से हमने इसे छुआ है।

हम उस वचन के विषय में बता रहे हैं जो
जीवन है। 2उसी जीवन का ज्ञान हमें कराया गया।
हमने उसे देखा। हम उसके साक्षी हैं और अब हम
तुम लोगों को उसी अनन्त जीवन की उद्घोषणा
कर रहे हैं जो पिता के साथ था और हमें जिसका
बोध कराया गया। 3हमने उसे देखा है और सुना
है। अब तुम्हें भी उसी का उपदेश दे रहे हैं ताकि
तुम भी हमारे साथ सहभागिता रखो। हमारी यह
सहभागिता परम पिता और उसके पुत्र यीशु मसीह
के साथ है। 4हम इन बातों को तुम्हें इसलिए लिख
रहे हैं कि हमारा आनन्द परिपूर्ण हो जाए।

परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करता है

5हमने यीशु मसीह से जो सुसमाचार सुना है,
वह यह है और इसे ही हम तुम्हें सुना रहे हैं:
परमेश्वर प्रकाश है और उसमें लेशमात्र भी अंधकार
नहीं है। 6यदि हम कहें कि हम उसके साझी हैं और
पाप के अन्धकारपूर्ण जीवन को जीते रहे तो हम
झूठ बोल रहे हैं और सत्य का अनुसरण नहीं कर
रहे हैं। 7किन्तु यदि हम अब प्रकाश में आगे बढ़ते
हैं क्योंकि प्रकाश में ही परमेश्वर है-तो हम विश्वासी
के रूप में एक दूसरे के सहभागी हैं, और परमेश्वर
के पुत्र यीशु का लहू हमें सभी पापों से शुद्ध कर
देता है।

8यदि हम कहते हैं कि हममें कोई पाप नहीं हैं तो
हम स्वयं अपने आपको छल रहे हैं और हममें
सच्चाई नहीं है। 9यदि हम अपने पापों को स्वीकार
कर लेते हैं तो हमारे पापों को क्षमा करने के लिए
परमेश्वर विश्वसनीय है और न्यायपूर्ण है और
समुचित है। तथा वह सभी पापों से हमें शुद्ध करता
है। 10यदि हम कहते हैं कि हमने कोई पाप नहीं
किया तो हम परमेश्वर को झूठा बनाते हैं और
उसका वचन हम में नहीं है।

यीशु हमारा सहायक है

2 मेरे प्यारे पुत्र-पुत्रियों, ये बातें मैं तुम्हें इसलिए
लिख रहा हूँ कि तुम पाप न करो। किन्तु यदि

we have Jesus Christ to help us. He always did
what was right, so he is able to defend us before
God the Father. 2 Jesus is the way our sins are
taken away. And he is the way all people can
have their sins taken away too.

3 If we obey what God has told us to do, then
we are sure that we know him. 4 If we say we
know God but do not obey his commands, we are
lying. The truth is not in us. 5 But when we
obey God's teaching, his love is truly working in
us. This is how we know that we are living in
him. 6 If we say we live in God, we must live the
way Jesus lived.

Jesus Told Us to Love Others

7 My dear friends, I am not writing a new
command to you. It is the same command you
have had since the beginning. This command is
the teaching you have already heard. 8 But what
I write is also a new command. It is a true one;
you can see its truth in Jesus and in yourselves.
The darkness is passing away, and the true light
is already shining.

9 Someone might say, "I am in the light," but
if they hate any of their brothers or sisters in
God's family, they are still in the darkness.
10 Those who love their brothers and sisters
live in the light, and there is nothing in them
that will make them do wrong. 11 But whoever
hates their brother or sister is in darkness. They
live in darkness. They don't know where they
are going, because the darkness has made them
blind.

12 I write to you, dear children,
because your sins are forgiven
through Christ.
13 I write to you, fathers,
because you know the one who existed
from the beginning.
I write to you, young people,
because you have defeated the Evil One.
14 I write to you, children,
because you know the Father.
I write to you, fathers,

कोई पाप करता है तो परमेश्वर के सामने हमारे
पापों का बचाव करने वाला एक है और वह है
धर्मी यीशु मसीह। 2वह एक बलिदान है जो हमारे
पापों का हरण करता है न केवल हमारे पापों का
बल्कि समूचे संसार के पापों का।

3यदि हम परमेश्वर के आदेशों का पालन करते हैं
तो यही वह मार्ग है जिससे हम निश्चय करते हैं कि
हमने सचमुच उसे जान लिया है। 4यदि कोई कहता है
कि, "मैं परमेश्वर को जानता हूँ!" और उसकी आज्ञाओं
का पालन नहीं करता तो वह झूठा है। उसके मन में
सत्य नहीं है। 5किन्तु यदि कोई परमेश्वर के उपदेश
का पालन करता है तो उसमें परमेश्वर के प्रेम ने
परिपूर्णता पा ली है। यही वह मार्ग है जिससे हमें
निश्चय होता है कि हम परमेश्वर में स्थित हैं: 6जो यह
कहता है कि वह परमेश्वर में स्थित है, उसे यीशु के
जैसा जीवन जीना चाहिए।

सबसे प्रेम करो

7हे प्यारे मित्रो, मैं तुम्हें कोई नई आज्ञा नहीं
लिख रहा हूँ बल्कि यह एक सनातन आज्ञा है, जो
तुम्हें प्रारम्भ में ही दे दी गयी थी। यह पुरानी आज्ञा
वह सुसंदेश है जिसे तुम सुन चुके हो। 8मैं तुम्हें
एक और दूसरी नयी आज्ञा लिख रहा हूँ। इस तथ्य
का सत्य मसीह के जीवन में और तुम्हारे जीवनों
में उजागर हुआ है क्योंकि अन्धकार विलीन हो
रहा है और सच्चा प्रकाश तो चमक ही रहा है।

9जो कहता है, "वह प्रकाश में स्थित है और फिर भी
अपने भाई से घृणा करता है, तो वह अब तक अंधकार में
बना हुआ है। 10जो अपने भाई को प्रेम करता है, प्रकाश
में स्थित रहता है। उसके जीवन में ऐसा कुछ भी नहीं है
जिससे कोई पाप में न पड़े। 11किन्तु जो अपने भाई से
घृणा करता है, अँधेरे में है। वह अन्धकारपूर्ण जीवन जी
रहा है। वह नहीं जानता, वह कहाँ जा रहा है। क्योंकि
अँधेरे ने उसे अंधा बना दिया है।

12 हे प्यारे बच्चों, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ,
क्योंकि यीशु मसीह के कारण
तुम्हारे पाप क्षमा किए गए हैं।
13 हे पिताओं, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ,
क्योंकि तुम, जो अनादिकाल से
स्थित है उसे जानते हो।
हे युवकों, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ,
क्योंकि तुमने उस दुष्ट पर विजय पा ली है।
14 हे बच्चों, मैं तुम्हें लिख रहा हूँ,
क्योंकि तुम पिता को पहचान चुके हो।
हे पिताओं, मैं तुम्हें लिख रहा हूँ,

because you know the one
who existed from the beginning.
I write to you, young people,
because you are strong.
The word of God lives in you,
and you have defeated the Evil One.

15 Don't love this evil world or the things in
it. If you love the world, you do not have the
love of the Father in you.
16 This is all there is
in the world: wanting to please our sinful selves,
wanting the sinful things we see, and being too
proud of what we have. But none of these comes
from the Father. They come from the world.
17 The world is passing away, and all the things
that people want in the world are passing away.
But whoever does what God wants will live
forever.

Don't Follow the Enemies of Christ

18 My dear children, the end is near! You have
heard that the enemy of Christ is coming. And
now many enemies of Christ are already here.
So we know that the end is near.
19 These
enemies were in our group, but they left us.
They did not really belong with us. If they were
really part of our group, they would have stayed
with us. But they left. This shows that none of
them really belonged with us.

20 You have the gift that the Holy One gave
you. So you all know the truth.
21 Do you think
I am writing this letter because you don't know
the truth? No, I am writing because you do know
the truth. And you know that no lie comes from
the truth.

22 So who is the liar? It is the one who says
Jesus is not the Messiah. Whoever says that is
the enemy of Christ—the one who does not
believe in the Father or in his Son.
23 Whoever
does not believe in the Son does not have the
Father, but whoever accepts the Son has the
Father too.

24 Be sure that you continue to follow the
teaching you heard from the beginning. If you
do that, you will always be in the Son and in the

क्योंकि तुम जो सृष्टि के अनादिकाल से
स्थित है, उसे जान गए हो।
हे नौजवानों, मैं तुम्हें लिख रहा हूँ,
क्योंकि तुम शक्तिशाली हो,
परमेश्वर का वचन तुम्हारे भीतर
निवास करता है
और तुमने उस दुष्ट आत्मा पर
विजय पा ली है।

15संसार को अथवा सांसारिक वस्तुओं को प्रेम
मत करते रहो। यदि कोई संसार से प्रेम रखता है
तो उसके हृदय में परमेश्वर के प्रति प्रेम नहीं है।
16क्योंकि इस संसार की हर वस्तुः जो तुम्हारे
पापपूर्ण स्वभाव को आकर्षित करती है, तुम्हारी
आँखों को भाती है और इस संसार की प्रत्येक वह
वस्तु, जिस पर लोग इतना गर्व करते हैं। परम
पिता की ओर से नहीं है बल्कि वह तो सांसारिक
है।
17यह संसार अपनी लालसाओं और इच्छाओं
समेत विलीन होता जा रहा है किन्तु वह जो
परमेश्वर की इच्छा का पालन करता है, अमर हो
जाता है।

मसीह के विरोधियों का अनुसरण मत करो

18हे प्रिय बच्चों, अन्तिम घड़ी आ पहुँची है! और
जैसा कि तुमने सुना है कि मसीह का विरोधी आ रहा
है। इसलिए अब अनेक मसीह-विरोधी प्रकट हो गए
हैं। इसी से हम जानते हैं कि अन्तिम घड़ी आ पहुँची
है।
19मसीह के विरोधी हमारे ही भीतर से निकले हैं
पर वास्तव में वे हमारे नहीं हैं क्योंकि यदि वे सचमुच
हमारे होते तो हमारे साथ ही रहते। किन्तु वे हमें छोड़
गए ताकि वे यह दिखा सकें कि उनमें से कोई भी
वास्तव में हमारा नहीं है।

20किन्तु तुम्हारा तो उस परम पवित्र ने आत्मा
के द्वारा अभिषेक कराया है। इसलिए तुम सब
सत्य को जानते हो।
21मैंने तुम्हें इसलिए नहीं
लिखा है कि तुम सत्य को नहीं जानते हो? बल्कि
तुम तो उसे जानते हो और इसलिए भी कि सत्य
से कोई झूठ नहीं निकलता।

22किन्तु जो यह कहता है कि यीशु मसीह नहीं है,
वह झूठा है। ऐसा व्यक्ति मसीह का शत्रु है। वह तो
पिता और पुत्र दोनों को नकारता है।
23वह जो पुत्र को
नकारता है, उसके पास पिता भी नहीं है कितु जो पुत्र
को मानता है, वह पिता को भी मानता है।

24जहाँ तक तुम्हारी बात है, तुमने अनादिकाल
से जो सुना है, उसे अपने भीतर बनाए रखो। जो

Father. 25 And this is what the Son promised us—eternal life.

26 I am writing this letter about those who are trying to lead you into the wrong way. 27 Christ gave you a special gift. You still have this gift in you. So you don't need anyone to teach you. The gift he gave you teaches you about everything. It is a true gift, not a false one. So continue to live in Christ, as his gift taught you.

28 Yes, my dear children, live in him. If we do this, we can be without fear on the day when Christ comes again. We will not need to hide and be ashamed when he comes. 29 You know that Christ always did what was right. So you know that all those who do what is right are God's children.

We Are God's Children

3 The Father has loved us so much! This shows how much he loved us: We are called children of God. And we really are his children. But the people in the world don't understand that we are God's children, because they have not known him. 2 Dear friends, now we are children of God. We have not yet been shown what we will be in the future. But we know that when Christ comes again, we will be like him. We will see him just as he is. 3 He is pure, and everyone who has this hope in him keeps themselves pure like Christ.

4 Anyone who sins breaks God's law. Yes, sinning is the same as living against God's law. 5 You know that Christ came to take away people's sins. There is no sin in Christ. 6 So whoever lives in Christ does not continue to sin. If they continue to sin, they have never really understood Christ and have never known him.

7 Dear children, don't let anyone lead you into the wrong way. Christ always did what was right. So to be good like Christ, you must do what is right. 8 The devil has been sinning since

तुमने अनादि काल से सुना है, यदि तुममें बना रहता है तो तुम पुत्र और पिता दोनों में स्थित रहोगे। 25उसने हमें अनन्त जीवन प्रदान करने का वचन दिया है।

26मैं ये बातें तुम्हें उन लोगों के सम्बन्ध में लिख रहा हूँ, जो तुम्हें छलने का जतन कर रहे हैं। 27किन्तु जहाँ तक तुम्हारी बात है, तुममें तो उस परम पवित्र से प्राप्त अभिषेक वर्तमान है, इसलिए तुम्हें तो आवश्यकता ही नहीं है कि कोई तुम्हें उपदेश दे, बल्कि तुम्हें तो वह आत्मा जिससे उस परम पवित्र ने तुम्हारा अभिषेक किया है, तुम्हें सब कुछ सिखाती है। और याद रखो, वही सत्य है, वह मिथ्या नहीं है। उसने तुम्हें जैसे सिखाया है, तुम मसीह में वैसे ही बने रहो।

28इसलिए प्यारे बच्चों, उसी में बने रहो ताकि जब हमें उसका ज्ञान हो तो हम आत्मविश्वास पा सकें। और उसके पुनःआगमन के समय हमें लज्जित न होना पड़े। 29यदि तुम यह जानते हो कि वह नेक है तो तुम यह भी जान लो कि वह जो धार्मिकता पर चलता है परमेश्वर की ही सन्तान है।

हम परमेश्वर की सन्तान हैं

3 विचार कर देखो कि परम पिता ने हम पर कितना महान प्रेम दर्शाया है! ताकि हम उसके पुत्र-पुत्री कहला सकें और वास्तव में वे हम हैं ही। इसलिए संसार हमें नहीं पहचानता क्योंकि वह मसीह को नहीं पहचानता। 2हे प्रिय मित्रो, अब हम परमेश्वर की सन्तान हैं किन्तु भविष्य में हम क्या होंगे, अभी तक इसका बोध नहीं कराया गया है। जो भी हो, हम यह जानते हैं कि मसीह के पुनः प्रकट होने पर हम उसी के समान हो जायेंगे क्योंकि वह जैसा है, हम उसे ठीक वैसा ही देखेंगे। 3हर कोई जो उस पर ऐसी आशा रखता है, वह अपने आपको वैसे ही पवित्र करता है जैसे मसीह पवित्र है।

4जो कोई पाप करता है, वह परमेश्वर के नियम को तोड़ता है क्योंकि नियम का तोड़ना ही पाप है। 5तुम तो जानते ही हो कि मसीह लोगों के पापों को हरने के लिए ही प्रकट हुआ और यह भी, कि उसमें कोई पाप नहीं है। 6जो कोई मसीह में बना रहता है, पाप नहीं करता रहता और हर कोई जो पाप करता रहता है उसने न तो उसके दर्शन किए हैं और न ही कभी उसे जाना है।

7हे प्यारे बच्चों, तुम कहीं छले न जाओ। वह जो धर्मपूर्वक आचरण करता रहता है, धर्मी है। ठीक वैसे ही जैसे मसीह धर्मी है। 8वह जो पाप

the beginning. Anyone who continues to sin belongs to the devil. The Son of God came for this: to destroy the devil's work.

9 Those who are God's children do not continue to sin, because the new life God gave them stays in them. They cannot keep sinning, because they have become children of God. 10 So we can see who God's children are and who the devil's children are. These are the ones who are not God's children: those who don't do what is right and those who do not love their brothers and sisters in God's family.

We Must Love One Another

11 This is the teaching you have heard from the beginning: We must love each other. 12 Don't be like Cain.* He belonged to the Evil One. Cain killed his brother. But why did he kill him? Because what Cain did was evil, and what his brother did was good.

13 Brothers and sisters, don't be surprised when the people of this world hate you. 14 We know that we have left death and have come into life. We know this because we love each other as brothers and sisters. Anyone who does not love is still in death. 15 Anyone who hates a fellow believer is a murderer. And you know that no murderer has eternal life.

16 This is how we know what real love is: Jesus gave his life for us. So we should give our lives for each other as brothers and sisters. 17 Suppose a believer who is rich enough to have all the necessities of life sees a fellow believer who is poor and does not have even basic needs. What if the rich believer does not help the poor one? Then it is clear that God's love is not in that person's heart. 18 My children, our love should not be only words and talk. No, our love must be real. We must show our love by the things we do.

19-20 That's how we know we belong to the way of truth. And when our hearts make us feel

Cain The son of Adam and Eve who killed his brother Abel. Read Gen. 4:1-16.

करता ही रहता है, शैतान का है क्योंकि शैतान अनादि काल से पाप करता चला आ रहा है। इसलिए परमेश्वर का पुत्र प्रकट हुआ कि वह शैतान के काम को नष्ट कर दे।

9जो परमेश्वर की सन्तान बन गया, पाप नहीं करता रहता, क्योंकि उसका बीज तो उसी में रहता है। सो वह पाप करता नहीं रह सकता क्योंकि वह परमेश्वर की संतान बन चुका है। 10परमेश्वर की संतान कौन है? और शैतान के बच्चे कौन से हैं? तुम उन्हें इस प्रकार जान सकते हो: प्रत्येक वह व्यक्ति जो धर्म पर नहीं चलता और अपने भाई को प्रेम नहीं करता, परमेश्वर का नहीं है।

परस्पर प्रेम से रहो

11यह उपदेश तुमने आरम्भ से ही सुना है कि हमें परस्पर प्रेम रखना चाहिए। 12हमें कैन* के जैसा नहीं बनना चाहिए जो उस दुष्टात्मा से सम्बन्धित था और जिसने अपने भाई की हत्या कर दी थी। उसने अपने भाई को भला क्यों मार डाला? उसने इसलिए ऐसा किया कि उसके कर्म बुरे थे जबकि उसके भाई के कर्म धार्मिकता के।

13हे भाईयों, यदि संसार तुमसे घृणा करता है, तो अचरज मत करो। 14हमें पता है कि हम मृत्यु के पार जीवन में आ पहुँचे हैं क्योंकि हम अपने बन्धुओं से प्रेम करते हैं। जो प्रेम नहीं करता, वह मृत्यु में स्थित है। 15प्रत्येक व्यक्ति जो अपने भाई से घृणा करता है, हत्यारा है और तुम तो जानते ही हो कि कोई हत्यारा अपनी सम्पत्ति के रूप में अनन्त जीवन को नहीं रखता। 16मसीह ने हमारे लिए अपना जीवन त्याग दिया। इसी से हम जानते हैं कि प्रेम क्या है? हमें भी अपने भाईयों के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर देने चाहिए।

17इसलिए जिसके पास भौतिक वैभव है, और जो अपने भाई को अभावग्रस्त देखकर भी उस पर दया नहीं करता, उसमें परमेश्वर का प्रेम है-यह कैसे कहा जा सकता है? 18हे प्यारे बच्चों, हमारा प्रेम केवल शब्दों और बातों तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए बल्कि वह कर्ममय और सच्चा होना चाहिए।

19इसी से हम जान लेंगे कि हम सत्य के हैं और परमेश्वर के आगे अपने हृदयों को आश्वस्त कर सकेंगे। 20बुरे कामों के लिए हमारा मन जब भी हमारा निषेध करता है तो यह इसलिए होता है कि

कैन कैन और अबेल आदम और हव्वा के पुत्र थे। कैन अबेल से जलता था इसलिए उसने उसे मार डाला। देखें उत्पत्ति 4:1-16

guilty, we can still have peace before God, because
God is greater than our hearts. He knows
everything.
21 My dear friends, if we don't feel that we
are doing wrong, we can be without fear when
we come to God. 22 And God gives us what we
ask for. We receive it because we obey God's
commands and do what pleases him. 23 This is
what God commands: that we believe in his Son
Jesus Christ, and that we love each other as he
commanded. 24 All who obey God's commands
live in God. And God lives in them. How do we
know that God lives in us? We know because of
the Spirit he gave us.

John Warns Against False Teachers

4 My dear friends, many false prophets are in
the world now. So don't believe every
spirit, but test the spirits to see if they are from
God. 2 This is how you can recognize God's
Spirit. One spirit says, "I believe that Jesus is the
Messiah who came to earth and became a
man." That Spirit is from God. 3 Another spirit
refuses to say this about Jesus. That spirit is
not from God. This is the spirit of the enemy
of Christ. You have heard that the enemy of
Christ is coming, and now he is already in the
world.
4 My dear children, you belong to God, so you
have already defeated these false prophets.
That's because the one who is in you is greater
than the one who is in the world. 5 And they
belong to the world, so what they say is from the
world too. And the world listens to what they
say. 6 But we are from God. So the people who
know God listen to us. But the people who are
not from God don't listen to us. That is how we
know the Spirit that is true and the spirit that is
false.

Love Comes From God

7 Dear friends, we should love each other,
because love comes from God. Everyone who

परमेश्वर हमारे मनों से बड़ा है और वह सब कुछ
को जानता है।
21हे प्यारे बच्चों, यदि कोई बुरा काम करते समय
हमारा मन हमें दोषी ठहराता तो परमेश्वर के सामने
हमें विश्वास बना रहता है। 22और जो कुछ हम उससे
माँगते हैं, उसे पाते हैं। क्योंकि हम उसके आदेशों पर
चल रहे हैं और उन्हीं बातों को कर रहे हैं, जो उसे
भाती हैं। 23उसका आदेश है: हम उसके पुत्र यीशु
मसीह के नाम में विश्वास रखें तथा जैसा कि उसने
हमें आदेश दिया है हम एक दूसरे से प्रेम करें। 24जो
उसके आदेशों का पालन करता है वह उसी में बना
रहता है। और उसमें परमेश्वर का निवास रहता है।
इस प्रकार, उस आत्मा के द्वारा जिसे परमेश्वर ने हमें
दिया है, हम यह जानते हैं कि हमारे भीतर परमेश्वर
निवास करता है।

झूठे उपदेशकों से सचेत रहो

4 हे प्रिय मित्रों, हर आत्मा का विश्वास मत करो
बल्कि सदा उन्हें परख कर देखो कि वे, क्या
परमात्मा के हैं? यह मैं तुमसे इसलिए कह रहा हूँ
क्योंकि बहुत से झूठे नबी संसार में फैले हुए हैं।
2परमेश्वर की आत्मा को तुम इस तरह पहचान
सकते हो: हर वह आत्मा जो यह मानती है कि,
"यीशु मसीह मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर आया
है।" वह परमेश्वर की ओर से है। 3और हर वह
आत्मा जो यीशु को नहीं मानती, परमेश्वर की
ओर से नहीं है। ऐसा व्यक्ति तो मसीह का शत्रु है,
जिसके विषय में तुमने सुना है कि वह आ रहा है,
बल्कि अब तो वह इस संसार में ही है।
4हे प्यारे बच्चों, तुम परमेश्वर के हो। इसलिए
तुमने मसीह के शत्रुओं पर विजय पा ली है।
क्योंकि वह परमेश्वर जो तुममें है, संसार में रहने
वाले शैतान से महान है। 5वे मसीह विरोधी लोग
सांसारिक है। इसलिए वे जो कुछ बोलते हैं, वह
सांसारिक है और संसार ही उनकी सुनता है।
6किन्तु हम परमेश्वर के हैं इसलिए जो परमेश्वर
को जानता है, हमारी सुनता है। किन्तु जो परमेश्वर
का नहीं है, हमारी नहीं सुनता। इस प्रकार से हम
सत्य की आत्मा को और लोगों को भटकाने वाली
आत्मा को पहचान सकते हैं।

प्रेम परमेश्वर से मिलता है

7हे प्यारे मित्रों, हम परस्पर प्रेम करें। क्योंकि प्रेम
परमेश्वर से मिलता है और हर कोई जो प्रेम करता
है, वह परमेश्वर की सन्तान बन गया है और

loves has become God's child. And so everyone who loves knows God. 8 Anyone who does not love does not know God, because God is love. 9 This is how God showed his love to us: He sent his only Son into the world to give us life through him. 10 True love is God's love for us, not our love for God. He sent his Son as the way to take away our sins.

11 That is how much God loved us, dear friends! So we also must love each other. 12 No one has ever seen God. But if we love each other, God lives in us. If we love each other, God's love has reached its goal—it is made perfect in us.

13 We know that we live in God and God lives in us. We know this because he gave us his Spirit. 14 We have seen that the Father sent his Son to be the Savior of the world, and this is what we tell people now. 15 Anyone who says, "I believe that Jesus is the Son of God," is a person who lives in God, and God lives in that person. 16 So we know the love that God has for us, and we trust that love.

God is love. Everyone who lives in love lives in God, and God lives in them. 17 If God's love is made perfect in us, we can be without fear on the day when God judges the world. We will be without fear, because in this world we are like Jesus. 18 Where God's love is, there is no fear, because God's perfect love takes away fear. It is his punishment that makes a person fear. So his love is not made perfect in the one who has fear.

19 We love because God first loved us. 20 If we say we love God but hate any of our brothers or sisters in his family, we are liars. If we don't love someone we have seen, how can we love God? We have never even seen him. 21 God gave us this command: If we love God, we must also love each other as brothers and sisters.

परमेश्वर को जानता है। 8वह जो प्रेम नहीं करता है, परमेश्वर को नहीं जाना पाया है। क्योंकि परमेश्वर ही प्रेम है। 9परमेश्वर ने अपना प्रेम इस प्रकार दर्शाया है: उसने अपने एकमात्र पुत्र को इस संसार में भेजा जिससे कि हम उसके पुत्र के द्वारा जीवन प्राप्त कर सकें। 10सच्चा प्रेम इसमें नहीं है कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया है, बल्कि इसमें है कि एक ऐसे बलिदान के रूप में जो हमारे पापों को धारण कर लेता है, उसने अपने पुत्र को भेज कर हमारे प्रति अपना प्रेम दर्शाया है।

11हे प्रिय मित्रों, यदि परमेश्वर ने इस प्रकार हम पर अपना प्रेम दिखाया है तो हमें भी एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए। 12परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा है किन्तु यदि हम आपस में प्रेम करते हैं तो परमेश्वर हममें निवास करता है और उसका प्रेम हमारे भीतर सम्पूर्ण हो जाता है।

13इस प्रकार हम जान सकते है कि हम परमेश्वर में ही निवास करते हैं और वह हमारे भीतर रहता है। क्योंकि उसने अपनी आत्मा का कुछ अंश हमें दिया है। 14इसे हमने देखा है और हम इसके साक्षी हैं कि परम पिता ने जगत के उद्धारकर्त्ता के रूप में अपने पुत्र को भेजा है। 15यदि कोई यह मानता है कि, "यीशु परमेश्वर का पुत्र है," तो परमेश्वर उसमें निवास करता है और वह परमेश्वर में रहने लगता है। 16इसलिए हम जानते हैं कि हमने अपना विश्वास उस प्रेम पर टिकाया है जो परमेश्वर में हमारे लिए है।

परमेश्वर प्रेम है और जो प्रेम में स्थित रहता है, वह परमेश्वर में स्थित रहता है और परमेश्वर उसमें स्थित रहता है। 17हमारे विषय में इसी रूप में प्रेम सिद्ध हुआ है ताकि न्याय के दिन हमें विश्वास बना रहे। हमारा यह विश्वास इसलिए बना हुआ है कि हम इस जगत में जो जीवन जी रहे है, वह मसीह के जीवन जैसा है। 18प्रेम में कोई भय नहीं होता बल्कि सम्पूर्ण प्रेम तो भय को भगा देता है। भय का संबन्ध तो दण्ड से है। सो जिसमें भय है, उसके प्रेम को अभी पूर्णता नहीं मिली है।

19हम प्रेम करते हैं क्योंकि पहले परमेश्वर ने हमें प्रेम किया है। 20यदि कोई कहता है, "मैं परमेश्वर को प्रेम करता हूँ," और अपने भाई से घृणा करता है तो वह झूठा है। क्योंकि अपने उस भाई को, जिसे उसने देखा है, जब वह प्रेम नहीं करता, तो परमेश्वर को जिसे उसने देखा ही नहीं है, वह प्रेम नहीं कर सकता। 21मसीह से हमें यह आदेश मिला है। वह जो परमेश्वर को प्रेम करता है, उसे अपने भाई से भी प्रेम करना चाहिए।

God's Children Win Against the World

5 The people who believe that Jesus is the
Messiah are God's children. Anyone who
loves the Father also loves the Father's children.
2 How do we know that we love God's children?
We know because we love God and we obey his
commands. 3 Loving God means obeying his
commands. And God's commands are not too hard
for us, 4 because everyone who is a child of God
has the power to win against the world. 5 It is
our faith that has won the victory against
the world. So who wins against the world?
Only those who believe that Jesus is the Son of
God.

God Told Us About His Son

6 Jesus Christ is the one who came. He came
with water and with blood. He did not come by
water only. No, Jesus came by both water and
blood. And the Spirit tells us that this is true.
The Spirit is the truth. 7 So there are three
witnesses that tell us about Jesus: 8 the Spirit,
the water, and the blood. These three witnesses
agree.

9 We believe people when they say something
is true. But what God says is more important.
And this is what God told us: He told us the truth
about his own Son. 10 Whoever believes in the
Son of God has the truth that God told us. But
people who do not believe God make God a liar,
because they do not believe what God told us
about his Son. 11 This is what God told us: God
has given us eternal life, and this life is in his
Son. 12 Whoever has the Son has life, but
whoever does not have the Son of God does not
have life.

We Have Eternal Life Now

13 I write this letter to you who believe in the
Son of God. I write so that you will know that
you have eternal life now. 14 We can come to

परमेश्वर की सन्तान संसार पर विजयी होती है

5 जो कोई यह विश्वास करता है कि यीशु
'मसीह' है, वह परमेश्वर की सन्तान बन
जाता है और जो कोई परम पिता से प्रेम करता है
वह उसकी सन्तान से भी प्रेम करेगा। 2इस प्रकार
जब हम परमेश्वर को प्रेम करते हैं और उसके
आदेशों का पालन करते हैं तो हम जान लेते हैं कि
हम परमेश्वर की सन्तानों से प्रेम करते हैं। 3उसके
आदेशों का पालन करते हुए हम यह दर्शाते हैं कि
हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं। उसके आदेश अत्यधिक
कठोर नहीं हैं। 4क्योंकि जो कोई परमेश्वर की
सन्तान बन जाता है, वह जगत पर विजय पा लेता
है और संसार के ऊपर हमें जिससे विजय मिली है,
वह है हमारा विश्वास। 5जो यह विश्वास करता है
कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, वही संसार पर
विजयी होता है।

परमेश्वर का कथनः अपने पुत्र के विषय में

6वह यीशु मसीह ही है जो हमारे पास जल और
लहू के साथ आया। केवल जल के साथ नहीं, बल्कि
जल और लहू के साथ। और वह आत्मा है जो उसकी
साक्षी देता है क्योंकि आत्मा ही सत्य है। 7साक्षी देने
वाले तीन हैं। 8आत्मा, जल और लहू और ये तीनों
साक्षियाँ एक ही साक्षी देकर परस्पर सहमत हैं।

9जब हम मनुष्य द्वारा दी गयी साक्षी को मानते
हैं तो परमेश्वर द्वारा दी गयी साक्षी तो और अधिक
मूल्यवान है। परमेश्वर की साक्षी का महत्व इसमें
है कि अपने पुत्र के विषय में साक्षी उसने दी है।
10वह जो परमेश्वर के पुत्र में विश्वास रखता है,
वह अपने भीतर उस साक्षी को रखता है। परमेश्वर
ने जो कहा है, उस पर जो विश्वास नहीं रखता,
वह परमेश्वर को झूठा ठहराता है। क्योंकि उसने
उस साक्षी का विश्वास नहीं किया है, जो परमेश्वर
ने अपने पुत्र के विषय में दी है। 11और वह साक्षी
यह हैः परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है और
वह जीवन उसके पुत्र में प्राप्त होता है। 12वह जो
उसके पुत्र को धारण करता है, उस जीवन को
धारण करता है। किन्तु जिसके पास परमेश्वर का
पुत्र नहीं है, उसके पास वह जीवन भी नहीं है।

अब अनन्त जीवन हमारा है

13परमेश्वर में विश्वास रखने वालो, तुमको ये
बातें मैं इसलिए लिख रहा हूँ जिससे तुम यह जान
लो कि अनन्त जीवन तुम्हारे पास है। 14हमारा
परमेश्वर में यह विश्वास है कि यदि हम उसकी

God with no doubts. This means that when we ask God for things (and those things agree with what God wants for us), God cares about what we say. 15 He listens to us every time we ask him. So we know that he gives us whatever we ask from him.

16 Suppose you see your fellow believer sinning (sin that does not lead to eternal death). You should pray for them. Then God will give them life. I am talking about people whose sin does not lead to eternal death. There is sin that leads to death. I don't mean that you should pray about that kind of sin. 17 Doing wrong is always sin. But there is sin that does not lead to eternal death.

18 We know that those who have been made God's children do not continue to sin. The Son of God keeps them safe.* The Evil One cannot hurt them. 19 We know that we belong to God, but the Evil One controls the whole world. 20 And we know that the Son of God has come and has given us understanding. So now we can know the one who is true, and we live in that true God. We are in his Son, Jesus Christ. He is the true God, and he is eternal life. 21 So, dear children, keep yourselves away from false gods.

इच्छा के अनुसार उससे विनती करें तो वह हमारी सुनता है 15और जब हम यह जानते हैं कि वह हमारी सुनता है-चाहे हम उससे कुछ भी माँगे तो हम यह भी जानते हैं कि जो हमने माँगा है, वह हमारा हो चुका है।

16यदि कोई देखता है कि उसका भाई कोई ऐसा पाप कर रहा है जिसका फल अनन्त मृत्यु नहीं है, तो उसे अपने भाई के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। परमेश्वर उसे जीवन प्रदान करेगा। मैं उनके लिए जीवन के विषय में बात कर रहा हूँ, जो ऐसे पाप में लगे हैं, जो उन्हें अनन्त मृत्यु तक नहीं पहुँचायेगा। ऐसा पाप भी होता है जिसका फल मृत्यु है। मैं तुमसे ऐसे पाप के सम्बन्ध में विनती करने को नहीं कह रहा हूँ। 17सभी बुरे काम पाप है। किन्तु ऐसा पाप भी होता है जो मृत्यु की ओर नहीं ले जाता।

18हम जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर का पुत्र बन गया, वह पाप नहीं करता रहता। बल्कि परमेश्वर का पुत्र उसकी रक्षा करता रहता है।* वह दुष्ट उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाता। 19हम जानते हैं कि हम परमेश्वर के हैं। यद्यपि यह समूचा संसार उस दुष्ट के वश में है। 20किन्तु हमको पता है कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उसने हमें वह ज्ञान दिया है ताकि हम उस परमेश्वर को जान ले जो सत्य है। और यह कि हम उसी में स्थित हैं, जो सत्य हैं, क्योंकि हम उसके पुत्र यीशु मसीह में स्थिर हैं। परम पिता ही सच्चा परमेश्वर है और वही अनन्त जीवन है। 21हे बच्चों, अपने आप को झूठे देवताओं से दूर रखो।

5:18 ***The Son … safe*** Literally, "The one who was born from God keeps him safe" or "… keeps himself safe."

5:18 बल्कि … रहता है शाब्दिक अर्थ "जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ उसे वह बचाए रखता है।" या "अपने आप को बचाए रखता है।"